ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

200वीं सदैव सत्य
महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

वर्ष 46 | अंक 36 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 14 अगस्त, 2023 से रविवार 20 अगस्त, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

स्वतंत्रता के प्रथम उद्घोषक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर

आर्य समाज ने निकाली दिल्ली में विशाल तिरंगा यात्रा

भारत राष्ट्र की आजादी को अक्षुण्ण रखना हमारा परम कर्तव्य -सुरेंद्र कुमार आर्य

देश की स्वतंत्रता में महर्षि दयानंद की रही विशेष भूमिका -प्रवेश वर्मा

भारत की आन-बान और शान का प्रतीक है- तिरंगा -धर्मपाल आर्य

पश्चिमी दिल्ली के आर्यजनों, युवाओं, बच्चों और महिलाओं की उत्साहपूर्वक भागीदारी रही अत्यंत प्रशंसनीय

13 अगस्त 2023 को तिरंगा लहराकर यात्रा का विधिवत उद्घाटन करते हुए सर्वश्री सुरेंद्र कुमार आर्य, प्रवेश वर्मा, धर्मपाल आर्य, विनय आर्य, सतीश चड्ढा, भारत भूषण मदान एवं अन्य महानुभाव तथा उत्साह से सराबोर तिरंगा यात्री

स्वाधीनता मानवता के लिए एक सर्वोत्तम वरदान है। क्योंकि स्वतंत्रता मानव जीवन की वह सुखद स्थिति है जिसके आधार पर व्यक्ति अपना समुचित विकास कर सकता है। लेकिन आजादी का अर्थ सामाजिक व्यवस्था, नियम, कानून के बंधनों का अभाव होना मात्र नहीं है, बल्कि इसका संबंध उन सकारात्मक मर्यादाओं से भी है जिनके आधार पर स्वतंत्र देश का आजाद नागरिक अपनी शारीरिक, आत्मिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय उन्नति और विकास में भी सहभागी रहे। इसलिए कल प्रश्न था आजादी का लेकिन आज चुनौती है स्वाधीनता की रक्षा करने की। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा से आर्य समाज ने आजादी के महासंग्राम में अग्रणी भूमिका निभाई थी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ही थे। उनकी प्रेरणा से लाखों आर्यवीर महान बलिदानियों ने अपना सर्वस्व भारत माता की स्वाधीनता के लिए न्यौछावर कर दिया था। इस वर्ष जब पूरा देश 77वें स्वाधीनता दिवस को हर्षोल्लास से मना रहा है तब महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के 2 वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल द्वारा 13 अगस्त 2023 को भव्य तिरंगा यात्रा संपन्न हुई।

लालकिले की प्राचीर से प्रधानमंत्री जी द्वारा महर्षि दयानन्द का प्रेरक स्मरण

आर्य समाज की ओर से हार्दिक आभार एवं अभिनन्दन

भारत राष्ट्र के 77वें स्वाधीनता दिवस पर लालकिले से लगातार 10वीं बार उदबोधन देते हुए माननीय प्रधानमंत्री

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने लाल किले की प्राचीर से लगातार दसवीं बार राष्ट्र को संबोधित करते हुए आर्य समाज के संस्थापक, भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के प्रेरणा स्रोत, महान समाज सुधारक ''महर्षि दयानंद सरस्वती जी की जयंती'' को एक विशेष अवसर कहकर वर्णित किया। परिणाम स्वरूप पूरे देश और दुनिया में सबको ज्ञात हो गया कि आर्य समाज महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस को दो वर्षीय भव्य आयोजनों के माध्यम से भारत सहित संपूर्ण विश्व में उमंग, उत्साह और उल्लास पूर्वक मना रहा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का आभार एवं अभिनन्दन।

-सभा महामंत्री

विकासपुरी से कीर्तिनगर के बीच विभिन्न स्थानों से होकर निकली तिरंगा यात्रा

आर्य समाज की यह विशाल तिरंगा यात्रा आर्य समाज आउटर रिंग रोड विकासपुरी से प्रारंभ होकर विकासपुरी के भीतर से पी.वी.आर. सिनेमा के सामने से चक्कर लगाते हुए आर्य समाज डी-ब्लॉक विकासपुरी के आगे से बढ़ते हुए शंकर गार्डन, विकासपुरी क्रासिंग से बांए मेट्रो स्टेशन जनकपुरी पश्चिम के सामने से दाएं मुड़कर आर्य समाज ए-ब्लॉक जनकपुरी से होते हुए, आर्य समाज सी-3 से डाबड़ी, जनक सिनेमा के सामने से होकर आर्य समाज सागरपुर और फिर आर्य समाज हरीनगर, एल-ब्लाक के सामने से जेल रोड, वाया तिलक नगर से चलकर, सुभाष नगर, टैगोर गार्डन, राजौरी गार्डन, रमेश नगर, मोती नगर से होकर आर्य समाज कीर्ति नगर में अपनी अपार सफलताओं के साथ संपन्न हुई।

तिरंगा यात्रा का नेतृत्व और शुभारंभ

आर्य समाज की इस तिरंगा यात्रा का शुभारंभ जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान एवं आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, क्षेत्रीय सांसद श्री प्रवेश साहिब सिंह

- शेष पृष्ठ 4 व 5 पर

वेदवाणी-संस्कृत

वेदरूपी कवच से निर्भयता

वेद-स्वाध्याय

यः सपत्नो योऽसपत्नो यश्च द्विषन् शपाति नः।
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम्॥

-अथर्व० 1 । 19 । 4

ऋषिः-ब्रह्मा॥ देवता-देवाः॥ छन्दः-अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- **यः**=जो **सपत्नः**=मेरा समानक्षेत्र में प्रतियोगी है **यः**=जो **असपत्नः**=असमान क्षेत्र में प्रतियोगी है **यः च**=और जो **द्विषन्**=द्वेष करता हुआ **नः**=मुझे **शपाति**=शाप देता है, कोसता है **तम्**=उसे **सर्वे देवाः**=सब देव **धूर्वन्तु**=ताड़ना करें, **मम**=मेरा तो **अन्तरम्**=भीतरी, अन्दर से रक्षा करने वाला **वर्म**=कवच, मेरा रक्षासाधन **ब्रह्म**=ब्रह्म है, ज्ञान है, वेदज्ञान है।

विनय- मैं किसी से द्वेष नहीं करता, किन्तु फिर भी कई भाई मेरे सपत्न व असपत्न होकर मुझसे शत्रुता रखते हैं। जो सपत्न हैं, समान क्षेत्रवाले हैं वो तो प्रायः ईर्ष्या व मत्सर के कारण मुझसे वैर रखते हैं और जो असपत्न हैं, असमान क्षेत्रवाले हैं, वे प्रायः मुझसे इस कारण शत्रुता करते हैं क्योंकि मेरे किसी कर्त्तव्यपालन से उनके स्वार्थ को धाक्का पहुँचता है। किसी भी कारण से कोई सपत्न या असपत्न, या कोई भी मेरा अन्य भाई जब मुझसे द्वेष करता है, मुझसे प्रीति नहीं रखता और अतएव मुझे शाप देता है, कोसता है, गाली देता है, बुरा-भला कहता है, मेरे लिए अपनी शक्ति-भर अनिष्ट चिन्तन करता है तो इससे मेरा तो कुछ बिगड़ता नहीं, किन्तु उसी का नाश होता है। जब तक मुझे ज्ञान नहीं मिला था तब तक तो मैं ऐसे शापों से घबरा उठता था और इनका वास्तव में मुझ पर बहुत प्रभाव भी होता था। जब कोई मुझे समाचार-पत्र या व्याख्यान द्वारा आम जनता में गालियाँ देता था, मेरे परिचित समाज में मेरी झूठी निन्दा फैलाता था तो इसे जानकर मैं बड़ा अशान्त हो जाता था और मेरा चित्त बड़ी देर तक उद्विग्न रहता था, किन्तु जब से कुछ ज्ञान मिला है, कुछ वेद-ज्ञान मिला है, प्रभु की भक्ति के प्रसाद में कुछ आत्म-ज्ञान मिला है तब से यह 'ब्रह्म', यह ज्ञान ही मेरा भीतरी कवच बन गया है। इस ज्ञान में रहता हुआ मैं इन शापों से सर्वथा अस्पृष्ट रहता हूँ और सदा आनन्द में रहता हूँ, पर वह बेचारा मुझसे द्वेष करने वाला तो अवश्य मारा जाता है; मनुष्यसमाज के सब देव लोग, सब ज्ञानी पुरुष, उस निरर्थक द्वेष करने वाले को डाँटते हैं, ताड़ना करते हैं तथा सब ईश्वरीय देव, सब 'ऋतु' देव उस अपराध के लिए उसे अवश्य दण्ड देते हैं। इसमें कोई क्या कर सकता है?

-:साभारः:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

नूंह में हिंदुओं पर पथराव, आगजनी और गोलीबारी- गहन चिंतन की सख्त आवश्यकता

समय रहते हिंदुओं को जागना होगा, वरना बहुत देर हो जायेगी

संपादकीय

आज भारत राष्ट्र में हिंदू समाज को एक वर्ग विशेष द्वारा भेड़ बकरी के समान समझा जा रहा है। जिन पर कहीं भी और कभी भी पथराव किया जा सकता है, गोलियां चलाई जा सकती हैं, उन्हें पूजा, प्रार्थना और शोभा यात्राओं का आयोजन करने से रोका जा सकता है। यह सब घटनाक्रम देखकर लगता है कि शायद हिंदू समाज अपने स्वरूप को भूलता जा रहा है, इसकी वीरता गफलत की नींद में सोई हुई है। हिंदू समाज को समय रहते जागना होगा, अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानना होगा, और दुनिया को यह बताना होगा कि हम ऋषि मुनियों की संतान हैं, ऐसे ऋषि मुनियों की संतान जिनके सामने पाप और पापी थर-थर कांपा करते थे, हम अपने धर्म, संस्कृति और राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने से भी कभी पीछे नहीं हटे। लेकिन पिछले दिनों नूंह की दर्दनाक घटना को देखने से लगता है कि बात-बात पर संविधान खतरे में है, भारत में हमें डर लगता है, इत्यादि का बयान देने वाले कहीं न कहीं झूठी गलतफहमी फैलाने का काम करते हैं।

वरना भारत की राजधानी दिल्ली से सटे नूंह मेवात में 31 जुलाई 2023 को दिनदहाड़े मुस्लिम समुदाय द्वारा हिन्दुओं की ब्रजमंडल यात्रा जो कि नल्हड के शिव मंदिर में जलाभिषेक करने के बाद गांव सिंगार की तरफ बढ़ ही रही थी कि खेडला चौंक के पास मुस्लिम समुदाय के 200 से ज्यादा लोगों ने हमला बोल दिया। इन लोगों ने सुनियोजित तरीके से पथराव के साथ ही निहत्थे लोगों पर गोलियां भी चलाईं। जिससे होमगार्ड के दो जवान नीरज और गुरुदेव की मृत्यु हो गई और 10 पुलिस कर्मियों सहित 15 लोगों के घायल होने की खबर है। बताया जा रहा है कि इस षड्यंत्रकारी वारदात में पुलिस इंस्पेक्टर के पेट में और डी.एस.पी. के सिर में भी गोली लगी है। जबकि सैकड़ों वाहनों को जला दिया गया है, इसके साथ ही विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संयुक्त महामंत्री श्री सुरेंद्र जैन का कहना है कि उन्हें भी निशाना बनाकर गोली चलाई गई थी जो कि उनके सिर के पास से होकर निकल गई और वह बाल-बाल बच गए। उन्होंने दावा किया है कि इस वारदात में कम से कम उनके 5 कार्यकर्ताओं की मौत हुई है और 100 लोग घायल हुए हैं।

> **"हिंदू समाज को एक वर्ग विशेष द्वारा भेड़ बकरी के समान समझा जा रहा है। जिन पर कहीं भी और कभी भी पथराव किया जा सकता है, गोलियां चलाई जा सकती हैं, उन्हें पूजा, प्रार्थना और शोभा यात्राओं का आयोजन करने से रोका जा सकता है। यह सब घटनाक्रम देखकर लगता है कि शायद हिंदू समाज अपने स्वरूप को भूलता जा रहा है, इसकी वीरता गफलत की नींद में सोई हुई है। हिंदू समाज को समय रहते जागना होगा, अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानना होगा, और दुनिया को यह बताना होगा कि हम ऋषि मुनियों की संतान हैं, ऐसे ऋषि मुनियों की संतान जिनके सामने पाप और पापी थर-थर कांपा करते थे, हम अपने धर्म, संस्कृति और राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने से भी कभी पीछे नहीं हटे। लेकिन पिछले दिनों नूंह की दर्दनाक घटना को देखने से लगता है कि बात-बात पर संविधन खतरे में है, भारत में हमें डर लगता है, इत्यादि का बयान देने वाले कहीं न कहीं झूठी गलतफहमी फैलाने का काम करते हैं।"**

इस अमानवीय और भयावह घटना की आर्य समाज घोर निन्दा व भर्त्सना करता है। साथ ही सभी शांति बनाए रखने की अपील भी करता है। लेकिन हरियाणा सरकार से यह अनुरोध भी करता है कि हैवान हमलावरों पर सख्त से सख्त कार्यवाही भी की जाए, और मेवात को कश्मीर बनने से रोका जाए। क्योंकि श्री अनिल विज, गृह मंत्री, हरियाणा सरकार ने घटनास्थल पर विमान द्वारा सैनिक उतारने की बात स्वयं कही है। इससे स्पष्ट है कि मेवात में सड़क के रास्ते से जाना पुलिस फोर्स और सेना के लिए भी मुश्किल कार्य है। लेकिन यहां एक बात और विचारणीय है कि जब मेवात का सारा क्षेत्र इतना संवेदनशील है तो हिंदू संगठनों की धार्मिक यात्रा जिसमें 5000 लोग शामिल बताए जा रहे हैं, तो क्या वहां 100 पुलिस कर्मी और होमगार्ड के जवान पर्याप्त थे? बावजूद इसके कि वहां इंटरनेट सेवाएं और आस-पास में सरकार को स्कूल भी बंद करने पड़े हैं।

इस सुनियोजित घटना के चलते प्रश्न तो बहुत सारे उठाए जा सकते हैं लेकिन आर्य समाज देश में शांति और समृद्धि का ही पक्षधर है और रहेगा। किंतु हिंदू समाज को हम यही कहना चाहते हैं कि समाज में सम्मान से जीने के लिए अपनी वीरता को संजोकर रखिए, अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा करने हेतु शक्ति संपन्न बनिए, अपनी एकता और देश की अखंडता को सुरक्षित रखिए, क्योंकि मानवजाति ने कुप्रथा और कुरीतियों के दौर में देखा है कि बलि हमेशा भेड़ और बकरियों दी जाती हैं, शेर की कभी कोई बलि नहीं देता। इसलिए अपनी बहादुरी और वीरता को जागृत रखिए।

-संपादक

साप्ताहिक स्वाध्याय

क्रमशः गतांक से आगे

पंडित इंद्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित जीवनी महर्षि दयानंद से क्रमशः साभार

अमृत की तलाश

इस भ्रमण में महर्षि दयानन्द ने कई सच्चे और झूठे योगियों के दर्शन किये। झूठे योगियों से उन्हें घृणा उत्पन्न हो जाती थी और सच्चे योगियों से वे कुछ-न-कुछ सीख ही लिया करते थे। चाणोद कल्याणी में वास करते हुए आपका योगानन्द नाम के एक योगी से परिचय हुआ। देर तक महर्षि ने उनसे योग की क्रियाएं सीखीं। अहमदाबाद में दो और योगियों ज्वालानन्दपुरी तथा शिवानन्द गिरि से उन्हें योगविद्या सीखने का अवसर मिला था। इस प्रकार मिले हुए अवसरों से जिज्ञासु महर्षि ने पूरा लाभ उठाया।

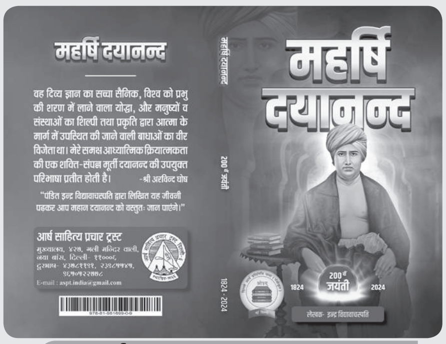

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर प्रकाशित

प्रकाशक- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, सहप्रकाशक- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, पुस्तक प्राप्ति के लिए vedicprakashan.com ऑनलाइन प्राप्त करें अथवा 9540040339 पर संपर्क करें।

घर से निकलकर कुछ समय तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुजरात में ही भ्रमण किया। वहां से बड़ौदा होते हुए चेतनमठ होकर नर्मदा के तट पर चिरकाल तक भिन्न-भिन्न स्थानों में निवास किया। नर्मदा-तट से आबू में ठहरकर सं0 1912 के कुम्भ पर महर्षि दयानन्द हरिद्वार आए और वहां के मठों और महन्तों की माया का पहली बार दिग्दर्शन किया। हरिद्वार से आप हिमालय की ओर चल दिये और सच्चे योगी की तलाश में कठिन से कठिन चोटियों पर चढ़कर, गुफाओं में घुसकर और घाटियां पार करके सच्चे जिज्ञासु होने का परिचय दिया।

इस भ्रमण में महर्षि दयानन्द ने कई सच्चे और झूठे योगियों के दर्शन किये। झूठे योगियों से उन्हें घृणा उत्पन्न हो जाती थी और सच्चे योगियों से वे कुछ-न-कुछ सीख ही लिया करते थे। चाणोद कल्याणी में वास करते हुए आपका योगानन्द नाम के एक योगी से परिचय हुआ। देर तक महर्षि ने उनसे योग की क्रियाएं सीखीं। अहमदाबाद में दो और योगियों ज्वालानन्दपुरी तथा शिवानन्द गिरि से उन्हें योगविद्या सीखने का अवसर मिला था। इस प्रकार मिले हुए अवसरों से जिज्ञासु महर्षि ने पूरा लाभ उठाया।

हरिद्वार से टिहरी राज्य की ओर जाते हुए महर्षि जी को तन्त्र-ग्रन्थ देखने का अवसर मिला। उन ग्रन्थों को देखकर उनके चित्त में इतनी घृणा हुई कि वह फिर अनेक नई व्याख्याएं सुनकर भी दूर नहीं हुई। टिहरी से विद्या और योग की धुन में मस्त महर्षि ने केदारघाट, रुद्रप्रयाग, सिद्धाश्रम आदि का भ्रमण करते हुए मठों और मन्दिरों की दुर्दशा को अच्छी तरह देखा। तुंगनाथ की चोटी पर चढ़ते हुए उन्हें आशा थी कि ऊपर कुछ अच्छा दृश्य देखने को मिलेगा वहां पहुंचकर भी देखा तो वैसा ही मन्दिर, वैसे ही पुजारी, सब लीला मैदान जैसी ही थी। गुप्त काशी का दौरा लगाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती ओखीमठ पहुंचे। ओखीमठ हिमालय का प्रसिद्ध मठ है। वहां की गुफाओं में जिज्ञासु और सच्चे महात्माओं की बहुत तलाश की, परन्तु वहां भी चरस और सुल्फे के धुएं से सब कुछ आच्छन्न ही दिखाई दिया।

-क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य संदेश

क्रमशः गतांक से आगे

मुंह तथा गले की बीमारियां –लक्षण और उपचार

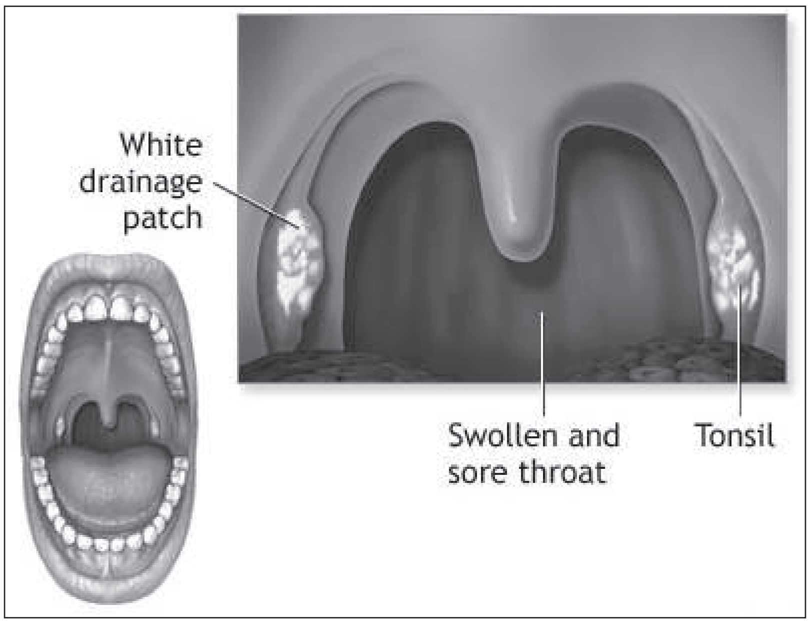

कोई भी पदार्थ निगलने में काफी कठिनाई होती है। कभी खांसी तथा बुखार भी हो जाता है तथा गले में गिल्टियाँ सी बनने लगती हैं। प्राय: देखा गया है कि सोते समय यह रोग बढ़ जाता है, बार-बार प्यास लगती है और बेचैनी बढ़ जाती है। आवाज मोटी हो जाती है, श्वास में बदबू तथा जीभ पर काफी मैल जमी हुई नजर आने लगती है। टान्सिल के सूजने के कारण कानों का दर्द भी हो सकता है तथा सुनने में बाधा हो सकती है। टान्सिल के इस रोग को टान्सिल-प्रदाह (tonsillitis) कहते हैं।

यह रोग आमतौर पर बच्चों तथा अल्प-व्यस्कों (children and young adults) को अधिक होता है। यह प्राय: ठंड लगने, दूध में विकार (infected milk), अधिक बर्फ व बर्फपानी, आइस्क्रीम, शर्बत, गतर तथा तले हुए पदार्थों, धूल के संक्रमण तथा कुछ संक्रामक रोगों तथा खसरा आदि की अवस्था में हो जाता है। इसके अतिरिक्त भोजन में विटामिनों की कमी भी इस रोग का प्रमुख कारण है।

अगर वर्ष में चार-पांच बार टान्सिल प्रदाह (frequent attacks of acute tonsillitis) हो जाए तो डॉक्टर प्राय: इनको ऑपरेशन द्वार दूर करने की सलाह देते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि अगर टान्सिल प्रदाह का इलाज न किया जाए तो यह दुख:दायी होने के अतिरिक्त कई अन्य रोगों को भी जन्म दे सकते हैं, परन्तु यदि टान्सिल को कटवा दिया जाए तो शरीर में रोगो से लड़ने की शक्ति क्षीण हो जाती है। श्वास प्रणाली से संबंधित कई रोग हो सकते हैं और श्वेतरक्त सैल पूर्ण गति के साथ नहीं बन पाते। इसलिए टान्सिल को दूर कराने में नहीं अपितु इनके ठीक इलाज में ही रोगी का हित है। इतना अवश्य ध्यान रखें कि अगर टान्सिल का रोग संक्रामक रोगों का कारण बनकर गुर्दे, आंख तथा नाक की बीमारियों का कारण बनने लगे तथा बोलने, खाने-पीने तथा सांस लेने में काफी कठिनाई प्रतीत हो रही हो और किसी इलाज द्वारा रोग कम न हो रहा हो तो डॉक्टर की सलाह अनुसार इन्हें कटवा देना चाहिए।

2. गले की पीड़ा (Sore Throat)

गले के घाव, गले की सूजन या गले का दर्द, गला खराब होने के लक्षण है। ऐसी हालत में तालू लाल होता है और गले की गिल्टियां (टान्सिल) सख्त हो जाती हैं। कोई भी पदार्थ आसानी से निगला नहीं जाता। ठंड लगने के कारण ही अधिकतर गला खराब होता है।

3. गलगंड (Goiter)

गलगंड जोकि गले में गांठे बनने और सूजन आदि का रोग है. मुख्य रूप से शरीर में आयोडीन की कमी के कारण होता है। आयोडीन की कमी के कारण थायरॉयड रोग से बचने के लिए और रोग हो जाने पर रोग से छुटकारा पाने के लिए आयोडीन की कमी पूरी करने के लिए आयोडाइजड नमक (iodised salt) का प्रयोग करें। डॉक्टर की सलाह लेकर खाने वाले आयोडीन की 10 बूंदे पानी में डालकर सवेरे-शाम पीएं। सोयाबीन का तेल तथा सोयाबीन से बनी कोई वस्तु खाना इस रोग में ठीक नहीं।

मुंह तथा गले के रोगों के उपचार के लिए एक्यूप्रेशर

टान्सिल, अडीनोयड, गलगंड तथा गले के अनेक रोगों को एक्युप्रेशर द्वारा दूर किया जा सकता है। पैरों तथा हाथों में इनसे संबंधित तीन प्रमुख प्रतिबिम्ब प्वाइंट हैं- पहला प्वाइंट अंगूठे और पहली अंगुली के मध्य वाले भाग से थोड़ा नीचे की तरफ होता है। दूसरा प्वाइंट वह भाग है जहां पर अंगूठे पैरों तथा हथेलियों से मिलते हैं। तीसरा प्वाइंट पैरों तथा हाथों के ऊपरी भाग में अंगूठे और पहली अंगुली के मध्य वाला भाग है।

अन्य एक्युप्रेशर प्वाइंट्स

इन रोगों को दूर करने के लिए हाथों, पैरों, चेहरे तथा गर्दन पर कई महत्वपूर्ण सहायक प्रतिबिम्ब प्वाइंट हैं। प्रमुख प्वाइंट्स पर प्रेशर देने के अतिरिक्त इनमें से कुछ या सब प्वाइंट्स पर भी प्रेशर दे सकते हैं। गर्दन से संबंधित स्नायु संस्थान वाले भाग जो कि हाथों तथा पैरों के अंगूठों के बाहरी तथा भीतरी भाग के साथ होता है- पर प्रेशर देने से भी इन रोगों में काफी लाभ पहुंचता है। गर्दन के पीछे प्रेशर देने से भी इन रोगों को दूर करने में सहायता मिलती है।

टान्सिल तथा गले के दूसरे रोगों में गले के गड्ढे वाले प्वाइंट (in hollow, base of throat) पर भी कुछ सेकंड के लिए अंगुली के साथ हल्का प्रेशर देना चाहिए। इन रोगों में पीठ के बिल्कुल ऊपरी भाग पर रीढ़ की हड्डी के दोनों तरफ भी प्रेशर दें। गलगंड रोग सम्बन्धी चेहरे पर दो प्रतिबिम्ब प्वाइंट हैं। गलगंड के रोग में हाथों तथा पैरों में पिट्यूटरी (pituitary), थायरॉयड तथा पैराथाइरॉयड ग्रंथियों (thyroid and parathyroid glands) संबंधी प्रतिबिम्ब

- शेष पृष्ठ 6 पर

पृष्ठ 1 का शेष

स्वाधीनता दिवस पर विशाल तिरंगा यात्रा संपन्न

वर्मा जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया। इस अवसर पर श्री भारत भूषण मदान, प्रतिनिधि सांसद, श्री सुभाष आर्य जी, पूर्व महापौर, सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी, सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी, आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री श्री सतीश चड्ढा जी, वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली के प्रधान कर्नल श्री रमेश मदान जी, महामंत्री श्री राकेश आर्य जी, कोषाध्यक्ष डॉ. मुकेश आर्य जी, आर्य समाज आउटर रिंग रोड विकासपुरी के महामंत्री श्री डालेश त्यागी जी, श्री ज्योति ओबराय जी, श्री यशपाल आर्य जी, श्री वीरेन्द्र सरदाना

तिरंगा यात्रा के शुभारंभ अवसर पर उद्बोधन देते हुए सर्वश्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, प्रवेश वर्मा जी, सांसद, मंच पर उपस्थित पूर्व महापौर, सुभाष आर्य जी, आचार्य आर्य नरेश, धर्मपाल आर्य जी तथा देशभक्ति के गीत और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए छात्राएं पश्चिमी दिल्ली तथा एक हाथ में ओम और दूसरे हाथ में तिरंगा झंडा लेकर यात्रा का नेतृत्व करते हुए श्री आर्य जी एवं अन्य महानुभाव।

नेतृत्व राष्ट्र भक्ति से ओत-प्रोत होकर होकर आगे बढ़ रहा था। तिरंगे ध्वज, ओम ध्वज और रंग बिरंगे गुब्बारों से सुसज्जित जीप और उनमें विराजमान आर्य समाज के अधिकारी भारत माता की जय महर्षि दयानंद सरस्वती की जय और वंदे मातरम के नारे लगाते हुए आगे बढ़ते रहे और सभी तिरंगा यात्रियों को बीच-बीच में उद्बोधन और निर्देश भी देते रहे आर्य समाज महावीर नगर की ओर से एक विशेष खली टेंपो ट्राली में विराजमान होकर वहां के अधिकारी सदस्य देशभक्ति के गीत और विशेष उद्बोधन और राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा देते रहे इस तरह जहां सैकड़ो बाइक, स्कूटी, कार, तिरंगा यात्रा की

पश्चिमी दिल्ली की सड़को पर 77वें स्वाधीनता दिवस पर राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत उमंग, उत्साह के वातावरण में तिरंगा यात्रा में उमड़ा आर्यों का विशाल जन समूह, आर्य नर-नारी, युवा और बच्चे एवं आर्य समाजों के अधिकारी मोटरसाइकिलों, कार, टेंपो, खुली जीपों में तिरंगा हाथ में लेकर भारत माता की जय, वन्दे मातरम, महर्षि दयानन्द की जय, आर्य समाज अमर रहे, ओ३म् का झण्डा ऊंचा रहे आदि के गगनभेदी नारे लगाते हुए।

जी, पश्चिमी दिल्ली की सभी आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री एवं सम्मानित अधिकारियों ने अग्रणी भूमिका निभाई और नेतृत्व किया।

तिरंगा यात्रा का सुंदर स्वरूप

आज सभी आर्यजनों के सिर पर केसरिया पगड़ी, गले में पीत वस्त्र, हाथों में तिरंगा झंडा और ओम ध्वज, बाइक, स्कूटर और कारों आदि वाहनों पर भी आगे पीछे तिरंगा और ओम ध्वज सजा हुआ था। सभी यात्री पूर्ण अनुशासन, व्यवस्था और कानून का पालन करते हुए भारत की आन-बान और शान तिरंगा को लहराते हुए आगे बढ़ रहे थे। भारत माता की जय, वंदे मातरम, अमर शहीद बलिदानियों की जय जयकार और अमर रहे, महर्षि दयानंद सरस्वती की जय और आर्य समाज अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे, ओम का झंडा ऊंचा रहे के गगन भेदी नारे गूंजते रहे, बीच-बीच में व्यवस्था की दृष्टि से आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के महामंत्री श्री बृहस्पति आर्य के नेतृत्व में आर्य वीर, कार्यकर्ता और अधिकारी लगातार दिशा निर्देशन करते रहे, संपूर्ण वातावरण राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत था, हर आयु वर्ग के लोग निरंतर आगे बढ़ रहे थे, यह तिरंगा यात्रा अपने आप में अनुपम, अद्भुत और ऐतिहासिक थी, यह तिरंगा यात्रा जहां-जहां भी गुजरी, वहां-वहां राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा और जागृति का संदेश जन-जन को स्वयं मिलता गया।

तिरंगा यात्रा का भव्य स्वागत

आर्य समाज की इस तिरंगा यात्रा का पश्चिमी दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों द्वारा भव्य स्वागत और अभिनंदन किया गया। जिसमें आर्य समाज आउटर रिंग रोड विकासपुरी, आर्य समाज डी-ब्लॉक विकासपुरी, आर्य समाज ए-ब्लॉक जनकपुरी, आर्य समाज जनकपुरी सी-3, आर्य समाज हरी नगर, एल-ब्लॉक, आर्य समाज राजौरी गार्डन, आर्य समाज सुदर्शन पार्क और आर्य समाज कीर्ति नगर द्वारा पुष्प माला और पुष्प वर्षा करके विशेष स्वागत और अभिनंदन किया गया। सभी आर्यजनों को जलपान और अन्य अनेक खाद्य पदार्थ प्रदान किए गए। उपरोक्त सभी आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री, अधिकारी और कार्यकर्ताओं का हर प्रकार का भावनात्मक सहयोग अपने आप में बहुत ही सुंदर और प्रसंसनीय सिद्ध हुआ।

तिरंगा यात्राा में खुली जीप बनी विशेष शोभा

संपूर्ण तिरंगा यात्रा का सुंदर दृश्य अपने आप में अत्यंत प्रेरक और अनुपम था। खुली जीपों में आर्य समाज का शोभा बनी, वहीं खुली जीपों का अपना महत्व और शोभा सिद्ध हुई।

तिरंगा यात्रा के शुभारंभ और समापन पर विशेष उद्बोधन

तिरंगा यात्रा के शुभारंभ अवसर पर आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार की छात्राओं द्वारा देशभक्ति के गीत और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। जिसे देख और सुनकर आर्यजनों का विशाल जनसमूह भाव विभोर हो गया और सभी ने उन्मुक्त हृदय से छात्राओं की प्रशंसा की। उपस्थित आर्यजनों को संबोधित करते हुए जेबीएम ग्रुप के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने स्वाधीनता दिवस की बधाई देते हुए अपने विशेष उद्बोधन में कहा कि भारत की आजादी में आर्य समाज का महत्वपूर्ण और सबसे बड़ा

- शेष पृष्ठ 5 पर

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती
कविताओं की रचना करें और पुरुस्कार पाएं

मुनीन्द्र दयानंद की जय हो– कवि अखिलेश मिश्र

गुरुकुल-थापक, सरल, सौम्य-मूरति, सुभ-लच्छन।
दया-धाम अभिराम, अभय, स्तुतिग्यान विचच्छना।।
संस्कारक विख्यात, बिसद सत्यार्थ प्रकासक।
आविष्कारक-सुद्धि सास्त्र, सद्धर्म बिकासक।।
जय-परापरा पण्डित-अवर, समाधिस्थ, अवधूत बर।
जय जय स्वराज्य सुठि-सूत्रधर, दयानन्द कलिकलुष हर

शब्दार्थ– आप गुरुकुलों के संस्थापक, सरल, सौम्य, मूर्ति, शुभ लक्षण सम्पन्न सुन्दर, दया-धाम, निडर और वेद विद्या में प्रवीण हैं। आप प्रसिद्ध संस्कारक (संस्कार विधि के रचयिता) और सत्य अर्थ के प्रकाश करने वाले (सत्यार्थप्रकाश के लेखक) शुद्धि के आविष्कारक और अच्छे धर्म के फैलाने वाले हैं। आप परा और अपरा विद्या के श्रेष्ठ पंडित एवम् समाधिस्थ संन्यासिप्रवर हैं। आपकी जय हो। सुन्दर स्वराज्य के व्यवस्थापक तथा कलियुग के पापों का नाश करने वाले मुनीन्द्र दयानन्द की जय हो।

गुरु विरजानंद-पाद-पद्म मकरन्द-मधुब्रत।
जय जीवन-धन-धाम, दिव्य-दुति, सदाचार-रत।।
जयति दि ग्विजय करन, धरन कोपीन- कमण्डल।
अघ बृत्रासुर-बधन-हेतु अनुपम-आखण्डल।।
जय जय समर्थ संसय समन-स्त्रुति-उपवन-सुरभित सुमन
जय पुन्य सस्य 'अखिलेस, हित, दयानन्द आनन्द-घन।।

शब्दार्थ– पद्म-कमल। मकरन्द-फूलों का रस। मधुब्रत-भ्रमर। जीवन-प्राणियों अखन्डल-इन्द्र। समन-शान्ति, दमन। उपवन-फुलवाडी। सुरभित-सुगंधित। सस्य-खेंती

भावार्थ– गुरुवर्य दंडी विरजानन्द के चरण-कमल के रस के लिए भ्रमर की सदृश, प्राणियों के धन-धाम, तथा दिव्य तेजवाले सदाचार में प्रवृत्त आपकी जय हो। आप दिग्विजय करने वाले और एक मात्र कोपीन-कमंडल धारण करने वाले हैं और पापरूपी वृत्रासुर के मारने के हेतु इन्द्र स्वरूप हैं आप की जय हो। आप शंका निवृत्त करने में समर्थ एवम् वेद रूपी वाटिका के सुगन्धित फूल हैं। आपकी जय हो। अखिलेश कवि कहते हैं कि हे व्रतीश्वर दयानन्दजी आप पुण्य रूपी खेती के लिए आनन्द-मेघ हैं।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अवसर पर आर्य संदेश के सभी आयु वर्ग के पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद जी के जीवन पर विभिन्न घटना क्रमों पर आधारित कविता की रचना करके संपादक, आर्य संदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001, पर भेजें अथवा Email- aryasandeshdelhi@gmail.com करें। आपकी स्तरीय कविता को आर्य संदेश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा और विशेष अवसर पर आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा।

पृष्ठ 4 का शेष

योगदान चिरकाल तक अविस्मरणीय रहेगा। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने ही सर्वप्रथम स्वराज्य का उद्घोष किया था। उनकी प्रेरणा से लाखों बलिदानियों ने अपना सर्वस्व न्योछावर करके हमें आजादी प्रदान की। आज हम उन सब अमर वीर बलिदानियों के प्रति श्रद्धा से शीश झुकाते हैं और अपने देश के प्रति कर्तव्य परायणता का संकल्प भी लेते हैं। तिरंगा यात्रा के भव्य आयोजन के लिए उन्होंने सभी आयोजकों को बधाई और शुभकामनाएं देते हुए सब का उत्साहवर्धन किया।

क्षेत्रीय सांसद श्री प्रवेश वर्मा जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी और आर्य समाज के सेवा कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200 की जयंती हम सबके लिए एक विशेष अवसर है। भारत की आजादी में महर्षि दयानंद सरस्वती की अहम भूमिका थी, उन्होंने अनेकानेक क्रांतिकारियों को देशभक्ति के लिए प्रेरित किया, इस अवसर पर हमें राष्ट्रभक्ति और मानव कल्याण का संकल्प लेकर देश सेवा के लिए आगे बढ़ना चाहिए। दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने वक्तव्य में कहा की तिरंगा झंडा भारत की आन-बान और शान का प्रतीक है, इसके प्रति सम्मान का विशेष भाव प्रदर्शित करते हुए हम तिरंगा यात्रा का सफल आयोजन कर रहे हैं, इस अवसर पर हम अपने सभी अमर शहीदों को नमन करते हैं, जिनके बलिदान के बल पर ही हमें आजादी प्राप्त हुई थी। महर्षि दयानंद सरस्वती और आर्य समाज के महान वीर बलिदानियों को उन्होंने स्मरण किया। इस अवसर पर श्री विनय आर्य जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी के उपकारों और आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास का वर्णन करते हुए सभी को राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा दी। श्री राकेश आर्य जी, श्री डालेश त्यागी जी, श्री कर्नल मदान जी, श्री ज्योति ओबरॉय जी, श्री ओम प्रकाश आर्य जी, आचार्य आर्य नरेश जी, श्री यशपाल आर्य जी, श्री वीरेंद्र सरदाना जी और पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के सभी अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यगण समर्पित भाव से अपने दायित्वों के निर्वहन में संलग्न रहे और सभी ने अहम भूमिका निभाई।

आर्य समाज कीर्ति नगर में समापन समारोह के अवसर पर वर्ष 2024 में 11 अगस्त को विशाल तिरंगा यात्रा की उद्घोषणा करते हुए सभा महामंत्री विनय आर्य जी, कर्नल मदान जी, भारत भूषण मदान जी, डालेश त्यागी जी, राकेश आर्य जी, गुरु राम सिंह जी के अनन्य अनुयाई एवं आर्य मानुभाव।

तिरंगा यात्रा का पुष्प वर्षा एवं जलपान तथा खाद्य पदार्थ प्रदान कर स्वागत करते हुए विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य महानुभाव।

तिरंगा यात्रा का समापन समारोह

तिरंगा यात्रा आर्य समाज कीर्ति नगर के प्रांगण में संपन्न हुआ जिसमें सतगुरु राम सिंह जी के अनुयाई और आर्य समाज के अधिकारी उपस्थित थे इस अवसर पर आर्य समाज कीर्ति नगर की ओर से प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य जी ने सभी उपस्थित महानुभावों का पीत वस्त्र द्वारा स्वागत किया। गुरु राम सिंह जी को याद करते हुए उनके अनुयायियों ने देशभक्ति के गीतों का उच्चारण किया और सभी को भाव विभोर कर दिया इस अवसर पर सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने अपने उद्बोधन में आजादी के महासमर में सिख समाज के बलिदान को स्मरण किया और महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रेरणा का वर्णन करते हुए बताया की चाहे सरदार अर्जुन सिंह जी हों, सरदार भगत सिंह हों, करतार सिंह सराभा या ऊधम सिंह हों सभी आर्य समाज की विचारधारा से प्रेरित थे। आपने तिरंगा यात्रा की अपार सफलता के लिए सभी अधिकारियों का आभार व्यक्त किया और अगले वर्ष 2024 में 11 अगस्त को आर्य समाज एक भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन करेगा, ऐसा विचार व्यक्त किया। जिसमें पूरे दिल्ली के आर्यजन भाग लेंगे और देशभक्ति का संदेश जन-जन तक पहुंचाया जाएगा श्री आर्य नरेश जी और अनेक अन्य महानुभावों ने अपने उद्बोधन दिए आर्य समाज कीर्ति नगर की ओर से जलपान और भोजन की विशेष व्यवस्था की गई। प्रेम सौहार्द के वातावरण में भव्य और विशाल तिरंगा यात्रा संपन्न हुई।

–राकेश आर्य, महामंत्री

Taking Bath in the Source of Knowledge

Who is Swami Virja Nand? There was a village Gangapur near Kartapur in Punjab. A Saraswat Brahman named as Narayan Dutt lived in that village. Shri Virja Nand Dandi, the Guru of Daya Nand, was born in the house of shri Narayan Dutt. The child had to face so many difficulties in early childhood. At the age of five the child suffered from cholera and lost his vision power to great extent and became blind. He was just 11 years old. Both of his parents died leaving him quite alone (Anaath). His elder brother had to take care of him. He was innocent like other general innocent brothers. He did not want to bear the burden of a blind brother. So he misbehaved with him. At last the child had to run away from home as he was fed up with misbehaviour of elder brother and his wife.

After leaving home the genius young man reached Rishikesh and Haridwar and tried to educate his with Tapashcharya (very hard work). He was made a Sanyasi with the help of Swami Purna Nand Saraswati in Haridwar, Kankhal, Kashi, Gaya and other religious places in search of Vidya (Education) for a long time and tried to learn (study) Vyakran and other religious books with the help of wise Sanyasis and Yogies. Status of Guru for Rishi Daya Nand, who had much thirst for Amrit, could be given only to that Tapasvi who had gone through great tapasya for certain aim, and travelled far and wide in search of the best idea. From this point of view we conclude Swami Virja Nand was the most suitable Guru of Swami Daya Nand.

After completing his studies Dandi Swami started teaching students, Soon his name and fame reached all around. His knowledge of Vyakran was considered to be of very high standard. King of Alwar requested him to stay with them for some days as he was convinced with his Panditya (great knowledge) and art of singing shlokas so sweetly. Dandi Swami accepted his request with the condition that the King would devote 3 hours daily for studies. The king could not keep his promise but the Sanyasi kept his promise definitely, He left Alwar from the day the king did not reach for studies.

Swami Virja Nand passed some time in Rajavadon and settled in Mathura. Students willing to learn Sanskrit came to him from far away places, even from Kashi, Dandiji's expertness in Vyakran was known far and wide. Some incident happened in his life that brought a particular change in his life. A Pandit from South lived near him. He recited original Ashtadhyai every day. By that time Dandiji understood 'Sidhant Kaumudhi'. Manorma and Shekhar as the beginning and end of Vyakran. Listening. The original Ashtadhyai opened his eyes in a way. He started feeling that the system of Vyakran guided by Rishi is different. After observing the system of Ashtadhyai he made up his mind that the system given by writer of Kaumudi was quite unnatural and diminishes the importance of Ashtadhyai. So, he gave up (left) books written by Dixit and all Vyakran books written before Dixit. It is said that he threw away all the books into Yamuna. Dandiji liked system of Ashtadyai so much that he threw away all the books kept with his students into Yamuna. Some of them were burnt. He liked only two books Ashtadyai and 'Mahabhashya' by heart.

To be continued in next issue

पृष्ठ 3 का शेष

प्वाइंट्स पर भी प्रेशर दें।

इनके अतिरिक्त खोपड़ी के बिल्कुल मध्य भाग (on top of skullmidline) पर अंगूठे के साथ तीन बार प्रति बार 3 सेकंड प्रेशर दें।

दांतदर्द (Toothache)

दांत दर्द होने पर हाथों तथा पैरों के ऊपरी भाग में चौथे चैनल में प्रेशर दें। दांत दर्द दूर करने के लिए ये बहुत ही महत्वपूर्ण प्वाइंट हैं। पैर के अंगूठे के साथ वाली अंगुली के ऊपर, पैर के ऊपर मध्य भाग में जहां पर टांग तथा पैर परस्पर मिलते हैं तथा कलाई के ऊपर छोटी अंगुली की दिशा में कुछ सेकंड के लिए प्रेशर दने से दांत दर्द या तो दूर हो जाता है। या फिर बहुत कम हो जाता है। इसके अतिरिक्त चेहरे पर दोनों तरफ कनपटी (आंख और कान के बीच के स्थान), व कान की ललकी जहां पर कान के पास जबड़ा खत्म होता है- दोनों तरफ प्रेशर दें। दांतों में जिस तरफ दर्द हो उसी तरफ के हाथ तथा पैर की अंगुलियों के अग्रभागों पर 3 से 5 मिनट तक प्रेशर दें। जिस दांत में दर्द हो रहा हो, जबड़े पर भी उसी स्थान पर अंगुली से प्रेशर दें। ऐसा करने से दांतों का दर्द एकदम कम हो जाता है। दोनों हाथों के ऊपरी भाग पर अंगूठे और पहली अंगुली के त्रिकोने स्थान पर भी प्रेशर देने से दांतों का दर्द दूर हो जाता है। इसके अतिरिक्त गर्दन से संबंधित स्नायु संस्थान वाले भाग तथा गर्दन के पीछे भी प्रेशर दें अगर एक्युप्रेशर द्वारा दांतों का दर्द न जाए तो दांतों के डॉक्टर को दिखाना चाहिए।

दांतों के लिए मुद्रा

1. शून्य मुद्रा
2. अपान मुद्रा

अनार के दानों को उबालकर दिन में तीन चार बार कुल्ला या गरारे करें।

पायेरिया में पीपल के काढ़े में शहद और घी मिलाकर सोने से पहले मुंह में रखें।

भुनी हुई हींग, कुटी हुई लोंग को दर्द करने वाले दांत में रखकर लगायें।

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद
अनादि का स्वरूप-पुरुषार्थ-पुरुषार्थ के भेद

54-अनादि का स्वरूप

जो न कभी उत्पन्न हो
जिसका नहीं निदान।
स्वयंसिद्ध रहता सदा वही
'अनादि'-विधान ।।70।।

55-पुरुषार्थ

सद्व्यवहार सुसिद्धि को
आलस को दे मार।
तन-मन-वाणी, काम से श्रम
'पुरुषार्थ' विचार ।।71।।

56-पुरुषार्थ के भेद

इच्छा हो अप्राप्त की
प्राप्त 'सुरक्षित' जान।
'रक्षित-वृद्धि' समृद्धि का
विद्या-हित में 'दान' ।।72।।
इस प्रकार पुरुषार्थ के
भेद जानिए चार।
इसको धारण कीजिए यह
जीवन का सार ।।73।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

मैं लूटने के लिए डॉ. नहीं बना हूं

क्रमशः गतांक से आगे

दूसरे डॉ. ने (जिनका इलाज पहले चल रहा था) श्री चिरंजीवजी को अलग ले जाकर कहा, 'आप बड़े भोले हैं। रायबहादुर ने तो आपसे कहा नहीं कि अब आपकी आवश्यकता नहीं और न ही मैंने आपसे ऐसा कहा है। वह बड़ी आसानी से आपके लिए पन्द्रह रुपये दैनिक दे सकते हैं।

डॉ. चिरंजीवजी ने वयोवृद्ध डॉ. के इस उपदेश को अपना अपमान समझते हुए कहा, ''मुझे क्षमा कीजिए। खेद है कि आपने मुझे ठीक-ठीक नहीं समझा। मैंने डॉक्टरी की विद्या इसलिए नहीं पाई कि अपने रोगियों से अनुचित धन कमाऊँ।'' यह कहकर आपने उस डॉ. का सुझाव ठुकरा दिया।

डॉ. चिरंजीवजी के जीवन में ऐसी अनेक घटनाएँ घटीं। स्मरण रहे कि ये रोगी लालचन्दजी डी.ए.वी. कालेज कमेटी के पहले प्रधान थे। डॉ. चिरंजीवी जितने सिद्धान्तनिष्ठ आर्य थे, लाला लालचन्दजी अपनी पत्नी की मृत्यु के पश्चात् उतने ही थोथे व पोपले सिद्ध हुए। अपनी पुत्री की आयु के समान एक कुमारी कन्या से आपने विवाह कर लिया। कई अवैदिक कर्म करके अपनी कीर्ति को आप ही मिट्टी में मिला दिया। देश को आज डा. चिरंजीव सरीखे डॉ. चाहिए।

ऋषि को सब प्रमाण कण्ठ थे

श्रीयुत दत्तजी लिखते हैं कि महर्षि वेद, शास्त्र, स्मृतियों, रामायण व महाभारत आदि के सब प्रमाण बिना पुस्तक देखे ही बता दिया करते थे। उन्हें पुस्तक देखने की आवश्यकता ही न थी। अपनी स्मरणशक्ति के भरोसे सब मन्त्र तथा श्लोक उद्धत कर देते थे।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

आर्य समाज द्वारा दिल्ली में विभिन्न सेवा बस्तियों में उत्साह पूर्वक मनाया गया स्वाधीनता दिवस

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज हमेशा अपने राष्ट्रीय पर्वों को अत्यंत हर्ष उल्लास से मनाता आया है। लेकिन इसके साथ ही आर्य समाज की यह मान्यता भी हमेशा से रही है कि जो लोग झुग्गी, झोपड़ी और निर्धन बस्तियों में रहते हैं, उन परिवारों को और उन के छोटे-बड़े जवान बच्चों को, स्त्री, पुरुषों को जहां एक तरफ संस्कार प्रदान किए जाएं, उनको जीवन जीने की कला सिखाई जाए, उन्हें नशा आदि दुर्गुण से बचाया जाए, वहीं उन्हें राष्ट्रभक्ति और समाजसेवी भी बनाया जाए, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर की अमृत संतान है। सेवा बस्तियों में रहने वाले अभावग्रस्त लोगों को अगर हम अपने साथ नहीं जोड़ेंगे तो फिर उनके जवान बच्चे मुख्यधारा से हटकर अपराध जगत से जुड़ जाते हैं।

इसी भावना और कामना को ध्यान में रखते हुए आर्य समाज द्वारा हमेशा सामाजिक और राष्ट्रीय पर्वों को सेवा बस्तियों में मनाया जा रहा है। इस श्रृंखला में भारत राष्ट्र के स्वाधीनता का उत्सव पश्चिमी दिल्ली की विभिन्न सेवा बस्तियों में वहां के नागरिकों के साथ उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सभा संवर्धक श्री राजवीर शास्त्री जी ने यज्ञ, भजन और राष्ट्रभक्ति का प्रेरक संदेश दिया। इन कार्यक्रमों में समाज सेवी और कर्तव्य निष्ठ श्री वेदप्रकाश जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही और 10 स्थानों पर तिरंगा फहराया गया। ये सभी विशेष आयोजन अपार सफलताओं के साथ संपन्न हुए।

उपरोक्त सभी कार्यक्रमों में हर आयु वर्ग के लोग सम्मिलित हुए और सभी ने राष्ट्रभक्ति के रंग में रंग कर देश धर्म और संस्कृति को अपनाने का संकल्प लिया। बड़े ही उत्साह पूर्वक बच्चों का भाग लेना अत्यंत आकर्षण का केंद्र रहा, प्रेम सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुए।

स्वाधीनता दिवस पर सहयोग द्वारा भोजन एवं वस्त्र वितरण कार्यक्रम संपन्न

स्वाधीनता दिवस के कार्यक्रमों में आर्य समाज की सेवा इकाई सहयोग द्वारा 10 अगस्त 2023 को लायंस क्लब भवन विवेक विहार के प्रांगण में निर्धन गरीब मजदूर लोगों के साथ स्वाधीनता दिवस मनाया गया, जिसमें उपस्थित सभी लोगों को देशभक्ति की प्रेरणा देते हुए भोजन वितरण किया गया और साथ ही जरूरतमंदों को वस्त्र भी वितरित किए गए, सभी उपस्थित लोगों ने महर्षि दयानंद और आर्य समाज के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया।

आर्य समाज ए-ब्लॉक जनकपुरी द्वारा 18 से 20 अगस्त 2023 तक श्रावणी पर्व का समारोह पूर्वक आयोजन

जिसमें ऋग्वेद यज्ञ ब्रह्मा पंडित देवेंद्र शास्त्री जी, प्रवचन आचार्य हरदेव जी और मधुर भजन आचार्य सुमन आर्य जी के होंगे।

कार्यक्रम- 18 एवं 19 अगस्त को प्रातः 7:45 से 8:45 तक
सायं: 6:30 से 7:00 तक यज्ञ, 7 से 8 बजे तक भजन,
8 से 9 बजे तक वेद प्रवचन होंगे।

20 अगस्त को 8 से 1 बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति एवं विशेष कार्यक्रम का आयोजन होगा, जिसमें वक्ता आचार्य हरदेव शास्त्री जी, श्री विनय आर्य, महामंत्री एवं मुख्यअतिथि- आचार्य धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा होंगे। आप सभी सपरिवार आमंत्रित हैं। **-मंत्री, वीरेन्द्र सरदाना**

महर्षि दयानन्द उवाच
परोपकारी एवं प्रेरक शिक्षाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उनकी जीवनी, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, सवमंतव्यामंतव्य प्रकाश, उपदेश मंजरी आदि अनेक ग्रंथों से चयनित परोपकारी और प्रेरक शिक्षाएं आर्य संदेश के नियत नियमित कॉलम में महर्षि दयानंद उवाच के नाम से प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की इन जनकल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आप इनका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें...

अवतारवादियों को चुनौतीः- मूर्तिपूजा और अवतारवाद आदि विषयों पर चाहे जो आकर शास्त्रार्थ कर ले। हम उसके भ्रम निवारणार्थ सर्वदा-सर्वदा समुद्यत् हैं। **(श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृ. 228)**

अविद्याः- जिस पुरुष को यह अभिमान होता है कि मैं धनाढ्य हूं अथवा मैं बड़ा राजा हूं उसे अविद्या का दोष है। दूसरे शरीर का क्षीण रहना, यह अविद्या के कारण ही होता है। **(पूना. प्र. उपदेश मंजरी पृ 11)**

अविश्वासः- जो विश्वास से उल्टा है। जिसका तत्व अर्थ न हो, वह 'अविश्वास' कहाता है। **(आर्योद्देश्यरत्नमाला पृ. 3)**

असत्यवादीः- देखो! थोड़े से जीवन में धर्मात्मा अर्थात् सत्यवादी, असत्यमानी, सत्यकारी मनुष्य धर्मार्थ, काम मोक्ष फलों को प्राप्त होता और मिथ्यावादी, मिथ्यामानी अनृतकारी सर्वदा दुःख को प्राप्त होता है। **(ऋ. द. प. वि. भाग 2 पृ. 626)**

शोक समाचार

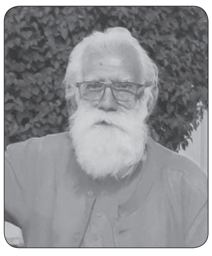

स्वामी सच्चिदानंद जी का निधन

आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी सच्चिदानंद जी का अकस्मात निधन हो गया। महर्षि दयानंद की शिक्षाओं और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में समर्पित स्वामी जी का अंतिम संस्कार 17 अगस्त 2023 को वैदिक ज्ञान आश्रम से यात्रा निकाल कर बस स्टैंड यमुना नगर श्मशान घाट में पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री पन्ना लाल खुराना जी का निधन

आर्य समाज के प्रति समर्पित श्री पन्ना लाल खुराना जी का 11 अगस्त 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 14 अगस्त 2023 को आर्य समाज मन्दिर जंगपुरा एक्सटेंसन में संपन्न हुई।

श्री सुरेन्द्र प्रकाश गुप्ता जी का निधन

आर्य समाज मानसरोवर गार्डेन के पूर्व प्रधान श्री अशोक कुमार गुप्ता जी के बड़े भाई श्री सुरेन्द्र प्रकाश गुप्ता जी का अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 13 अगस्त 2023 को आर्य समाज मानसरोवर गार्डेन में संपन्न हुई। जिसमें क्षेत्रीय आर्यजनों सहित सभा की ओर श्रद्धांजलि दी गई।

श्री राजकुमार सिंघल जी का निधन

दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के उपप्रधान श्री राजकुमार सिंघल जी का 9 अगस्त 2023 को अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 18 अगस्त 2023 को चुनरी साफा, ए-1 जवाहर पार्क देवली रोड में संपन्न हुई। जिसमें वेद प्रचार मंडल सहित सभा की ओर से श्रद्धांलजि दी गई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -संपादक

सोमवार 14 अगस्त, 2023 से रविवार 20 अगस्त, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 16-17-18 अगस्त, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 अगस्त, 2023

ओ३म्

आर्य समाज की पहल

आर्थिक रूप से कमजोर बारहवीं पास छात्रों के आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2023

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों का लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- पात्रता परीक्षा ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान और रिजनिंग पर आधारित होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 अक्टूबर 2023

आवेदन करने के लिए वेबसाइट www.aryapragati.com पर जाए।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

JioTV Jio TV+

आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल

आर्य सन्देश टीवी

Arya Sandesh TV

अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी

Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj .org

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE TOWARDS CREATING A CLEANER | GREENER | SAFER TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	मुद्रित मूल्य ₹60	प्रचारार्थ ₹40
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹150	₹100
उपहार संस्करण	₹1100	₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹200	₹130
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹250	₹170

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोन: 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादक: धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादक: विनय आर्य ● व्यवस्थापक: शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह